Knowledge Consortium of Gujarat
Department of Higher Education - Government of Gujarat
Journal of Multi-Disciplinary - ISSN : 2279-0268

Continuous Issue - 23 | March – April 2018

# वारली आदिजाति की संस्कृति

**प्रस्तावना :**

भारतीय समाज विभिन्नतओं से भरा हुआ है, इन विभिन्नताओं में भारत की आदिजातियाँ भी शामिल है | भारतीय समाजमें ये आदिजातियाँ अपनी मूल संस्कृति को अभी तक बनाये हुए हैं, हालाँकि कई जनजातियों ने अपनी मूल संस्कृति के कुछ पहलू गवां दिए हैं या तो गंवा रहे हैं | फिर भी आदिजातियों ने अपनी संस्कृति के कई पहलु अभी तक बनाये रखे हैं | वारली आदिजाति भी उन्हीं मे से एक है जो परिवर्तन के दौर से गुजर रही है | ज्यादातर आदिजातियाँ आज भी मुख्यधारा से पिछड़ी हुई हैं |

**वारली आदिजाति का परिचय :**

वारली आदिजाति दादरा एवं नगर हवेली, गुजरात, महाराष्ट्र में मुख्य रूपसे पाई जाने वाली आदिजाति है जिसका मूल अनार्य प्रजाति का है | वारली आदिजाति का ज्यादातर प्रमाण विंध्याचल और सापुतारा का प्रदेश माना जाता है | यह जाति कोंकण प्रदेश से आई है ऐसा माना जाता है | वर्तमान समय में गुजरात के वलसाड एवं डांग जिला तथा दादरा एवं नगर हवेली संघप्रदेश में, महाराष्ट्र के ठाणे एवं नासिक जिले में पाई जाति है जो इनका मूल निवास माना जाता है | यह जाति सामान्यत: हिन्दूत्व में आस्था रखती है लेकिन इनके कई रिवाज, त्यौहार मनाने का तरीका, जन्म, विवाह एवं मरण से सम्बंधित मान्यताएँ, परम्पराएँ, रीतियाँ उन्हें हिन्दू समाज से उनके अलग अस्तित्व की पहचान देती है | वारली जाति की उत्पत्ति और विकास के बारे में विद्वानों के भिन्न भिन्न मंतव्य पाए जाते हैं |

**गुजराती विश्वकोष** के अनुसार, वारली का मतलब एक आदिवासी जाति |
**बोम्बे गेझेटीयर** के अनुसार, वारली जाति के लोग दक्षिण भारत के कोंकण प्रदेश के वासी है | चौदहवी और पंद्रहवी सताब्दी के दरम्यान फिरंगी, प्राकृतिक आपदाएँ तथा मराठाओंकी साम्राज्यवादी प्रवृत्तियो के कारण वे अपना प्रदेश छोड़कर धरमपुर, सूरत और आसपास के प्रदेश में आकर बसे होंगे | वारुल का मतलब जमीं का छोटा टुकड़ा | वारली जाति के लोग पहाड़ी प्रदेशों में छोटे जमीं के टुकड़ों पर खेती करते थे इसलिए उनका नाम वारली बना यह भी कुछ विद्वानों का मानना है | और एक मत के अनुसार वे वारालाट प्रदेश के निवासी होने के कारण वारली नाम प्रचलित हुआ | वारालाट प्रदेश कोलाबा और ठाणे जिले का एक विभाग था |

**प्राकृत भाषा** में वारली शब्द कोंकण से आई हुई 'वरुड' कोळी जाति के लिए उपयुक्त शब्द था 'वरुड' में से 'वारुकी' अर्थात वारली. **इरावती कर्वे** के मतानुसार सह्याद्री पर्वतमाला के आसपास बसने वाली जातियों मे से एक वारली जाति थी |

**ठाकर** (२००४) बताते है कि, विन्ध्य एवं सातपुडा के आसपास तीन अनार्य जाति निषाद, व्यास और वरुड थी उसमे से वरुड शब्द का अपभ्रंश हो के 'वारली' शब्द बना. वारली जाति एवं शब्द के बारे में कोई लिखित इतिहास नहीं मिलता इसलिए हमें विद्वानों के अनुमान की सहायता लेनी पड़ती है |

**सवे** (१९३५)ने "द वारलीस : ए स्टडी ऑफ़ एन एबोरिजिनल ट्राइब ऑफ़ द बोम्बे प्रेसिडेंसी" में थाणे जिले के वारली आदिवासियों के बारे में एथ्नोग्राफिक अभिगम से अभ्यास किया है | इस अभ्यासमे वारली

आदिवासियों के सामाजिक, शैक्षिक, आर्थिक परिमाणों का अभ्यास किया गया है | उन्होंने बताया कि, वारली आदिवासियों में कझिन मेरेज समाजमान्य है, कन्या का शुल्क लेने का रिवाज है जिसे वे 'देज' कहते है, विधुर की शादी अगर कुंवारी कन्या से होनी हो तो पहले कन्या की शादी रुई या सुमड़ी के वृक्ष से करनी पड़ती है | उसके बाद में ही कन्या की शादी विधुर के साथ हो सकती है | शादी के कुछ रिवाजों पर हिंदुत्व का प्रभाव देखने मिलता है | वे होली के त्यौहार को शिमगा कहते हैं | वारली आदिवासियों में दो प्रकार के गीत पाए जाते हैं, एक लोक गीत, और दूसरे शादी, कृषि एवं मरण प्रसंग सम्बंधित गीत | वारली आदिवासियों में गोत्र पाए जाते हैं, वारली समुदाय भिन्न भिन्न गोत्रों में विभाजित है, शादी भी गोत्र के बहार ही होती हे | उनका मानना है कि, हर गोत्र का एक पूर्वज था | हरेक गाँव में झगड़ो के निवारण के लिए पंच की सहाय ली जाती है | इस पंच को 'जात' कहा जाता है |

**एन्थोवन** (१९७५) अपने अभ्यास "द ट्राइब्स एण्ड कास्ट्स ऑफ़ बोम्बे" पुस्तक में सहायक अधिकारियों के द्वारा एकत्र की गई वारली आदिवासियों उनके धार्मिक सामाजिक जीवन के बारे में चर्चा की है |

**वारली पेन्टिंग :**

वारली आदिजाति की संस्कृति अन्य समुदायों से भिन्न है | वारली आदिजाति की एक खास बात ये है कि उन्होंने अपनी संस्कृति के कुछ ऐसे पहलू बनाये रखे है जो उनकी पहचान बन गया है | जिसमे एक वारली पेन्टिंग है | वारली जाति के लोग जीवन के ख़ुशी के समय पर अपने जोंपड़े की मिट्टी की बनी हुई दिवार पे चित्र बनाते थे | चूना पत्थर या चावल पीसकर सफ़ेद रंग बनाते थे, उस रंग को पेड़ की छोटी डंडी से भींत पर चित्र बनाने के लिए इस्तमाल करते थे | पहले वारली जाति के सभी परिवारों को ये चित्र बनाने की कला आती थी | वर्तमान समय की स्थिति को देखते हुए कह सकते है कि वारली चित्र कला का वैश्विक प्रसार हुआ है मगर नयी पीढ़ी अपनी इस कला से दूर हो रही है | वारली पेन्टिंग बनाने का तरीका कुछ इस तरह है | जिस जगह पर चित्र बनाना हो वहाँ भींत पर पहले लाल, पिली या काली मिट्टी से बना हुआ मिश्रण तैयार करके भींत पर लगाया जाता है | उसके बाद चित्र बनाने के लिए सफ़ेद रंग के पत्थर को कूटकर उसका मिश्रण तैयार किया जाता है अथवा चावल को पीसकर पानी के साथ मिश्रण बनाया जाता है | मिश्रण तैयार हो जाने पर घास या पेड़ की डाली का तिनका लेकर उसे पेन्टिंग ब्रश की तरह इस्तमाल करके चित्र तैयार किया जाता है | वारली पेन्टिंग में इस्तमाल होने वाली सारी चीजें प्राकृतिक होती है | वारली पेन्टिंग में उनके समाज जीवन की सारी गतिविधियों को चित्रित किया जाता है | वारली पेन्टिंग में जन्म से लेकर मरण तक की विभिन्न गति विधियों को चित्रित किया जाता है जैसे कि-

- बालक के जन्म के पांचवे दिन की जाने वाली पांचोरे की विधि
- विवाह के विभिन्न रीत-रीवाज
- तारपा एवं भवाड़ा नृत्य
- होली का पर्व
- दीपावली का पर्व
- धान बोते हुए किसान
- धान की कटाई करते हुए किसान
- फसल कटाई के बाद होने वाला स्नेह-मिलन (भवाड़ा)
- गाँव के देवी -देवतओं की पूजा- अर्चना
- बीमारी या रोग को रोकने के लिए होने वाली पूजा विधि

- मृत आत्मा की शांति के लिए होने वाली विधि ..... आदि तमाम दैनिक एवं विशेष गतिविधियाँ वारली चित्र में अंकित की जाति है |

वारली चित्रकला उनकी कला का विशेष नमूना कह सकते है | वर्तमान समय में यह कला सिर्फ वारली आदिजाति तक सीमित नहीं रही, किन्तु देश और विश्व में एक आर्ट का प्रतिक बन गई है | किन्तु वारली आदिवासियों की नई पीढ़ी के लोग अपनी इस कला के प्रति उदासीन बन रहे हैं | वर्तमान समय में पहले की तरह अपने जोंपड़े या घर की भींतो पर वारली चित्र बहुत कम पाए जाते हैं | दादरा एवं नगर हवेली में पेंटरों ने वारली पेन्टिंग की परंपरा बनाए रखी है | बाजार में वारली पेन्टिंग वाले रुमाल, कुर्ते, साडी आदि मिलते हैं जो इस कला की लोकप्रियता को प्रस्तुत करती है |

वारली पेन्टिंग का सामाजिक महत्व देखा जाए तो, आदिवासियों में लिखित इतिहास की परंपरा नहीं थी, इसलिए शायद वारली आदिवासियों ने अपनी चित्रकला में अपनी परंपरा को समाविष्ट करने का सोचा होगा | चित्रों के जरिए वे अपनी नई पीढ़ी को अपने विशेष एवं दैनिक गतिविधियों से परिचित करवाना उचित समझा होगा ताकि उनकी परंपरा पीढियों तक बनी रहे |

**तारपा नृत्य :**

वारली आदिजाति की चित्रकला के साथ 'तारपा नृत्य' भी प्रसिध्ध है, जो तारपा नामक संगीत वाद्य के सुरों के साथ ताल मिलाकर नृत्य किया जाता है इसलिए ये नृत्य का नाम 'तारपा नृत्य' कहा जाता है | तारपा नृत्य में एक तारपा वाद्य को बजाने वाला व्यक्ति होता है उसके आसपास पुरुष एवं महिलायें एक-दुसरे का हाथ पकड़कर नृत्य करते हैं | तारपा के सुरों के ताल बदलने पर नृत्य के स्टेप भी बदलकर नृत्य को रसपूर्ण बनाया जाता है | तारपा नृत्य के द्वारा लोग अपनी ख़ुशी एवं सामुदायिक एकता अभिव्यक्त करते हैं |

तारपा नृत्य का सामाजिक महत्व देखा जाये तो सभी ख़ुशी के मोके पर स्त्री एवं पुरुष दोनों समान तरीके से भाग ले सकते है जो स्त्री-पुरुष समानता का प्रतिक कह सकते हैं | तारपा वाद्य की रचना भी प्राकृतिक है | तारपा को बनाने के लिए पारंपरिक ज्ञान का होना जरुरी है, हर कोई इसे नहीं बना सकता | सुकी हुई लोकी, ताड के पेड़ के पत्ते, और लकड़ी का उपयोग करके तारपा को बनाया जाता है | यह सारी चीजें सही तरीके से जोड़ने के लिए डामर का उपयोग किया जाता है | तारपा को सजाने के लिए मोर के झड के गिरे हुए पंख का उपयोग किया जाता है |

दादरा एवं नगर हवेली संघप्रदेश में 'तारपा नृत्य' काफी लोकप्रिय है | यहाँ हर साल दिसंबर के अंतिम सप्ताह में 'तारपा फेस्टिवल' का आयोजन किया जाता है, जो यहाँ की आदिवासी संस्कृति के प्रति सम्मान अभिव्यक्त करता है, इस फेस्टिवल का आयोजन यहाँ के टूरिझम विभाग के द्वारा किया जाता है | 'तारपा फेस्टिवल' का प्रारंभ तारपा नृत्य, भवाड़ानृत्य, तुर-थालीनृत्य आदि आदिवासी नृत्यों से होता है |

इस तरह वारली आदिजाति ने अपनी संस्कृति के दो अहम् पहलू वारली आर्ट एवं तारपा नृत्य जैसी कुछ विशेषता आज भी बनाए रखे है जो उनकी संस्कृति की पहचान है |

## संदर्भ


I. Enthoven, R. E. (1975). The Tribes and Castes. Cosmo Publications, Delhi.

II. ICSSR (1974-85). Survey of Research in Social Anthropology. Trend Report, Vol.I Bombay. Popular Prakashan.

III. Majumdar and Madan. (1956). Race and Culture of India. Asia Publishing House, Bombay,culcutta, New Delhi.

IV. મુસ્તાલી, મસવી. (1983). ગુજરાતના આદિવાસીની અર્થવ્યવસ્થા. અમદાવાદ: ગુજરાત વિદ્યાપીઠ.

V. પંડ્યા, ગૌરીશંકર. (1992).વારલી જાતિનો સમાજમાનવશાસ્ત્રીય અભ્યાસ. અમદાવાદ: ગુજરાત વિદ્યાપીઠ.

VI. Pandya and Patel.(1993). Indebtedness and Land Alienation Aamong The Tribals Of Dadra Nagar Haveli (U.T.). Ahmadabad: Tribal Research and Training Institute, Gujarat Vidyapith.

VII. Save, K.J. (1935). The Warlis : A Study of an Aboriginal Tribe of the Bombay Presidency, M.A.

VIII. Vdyarthi, L. P. (1972). Tribal Ethnography In India – A Trend Report (Ed.)

IX. Joshi, O.P. (2003). Art and Aesthetics in tribes of south Gujarat. Centre for social studies, Surat.


**********


**गीताबेन पानियाभाई गामीत**

आसिस्टंट प्रोफ़ेसर

समाजशास्त्र

डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम गवर्मेन्ट कोलेज

सेलवास


Copyright © 2012 – 2018 KCG. All Rights Reserved. | Powered By: Knowledge Consortium of Gujarat